International Journal of Physical and Social Science
Vol. 11 Issue 11, November 2021,
ISSN: 2249-5894 Impact Factor: 6.644
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

भारत एवं दक्षिण एशिया (सन् 1990 के पश्चात्): एक अध्ययन

डॉ. वंश गोपाल असिस्टेंट प्रोफेसर
गोस्वामी तुलसीदास राजकीय महाविद्यालय कर्वी चित्रकूट

सारांश - सोवियत संघ के विघटन तथा एकधुवीय विश्व व्यवस्था के उदय, विदेश नीति के निर्धारण में गैरराष्ट्रीय कारकों की भूमिका वैश्वीकरण एवं अन्तर्राष्ट्रीय अंतनिर्भरता में उत्तरोत्तर वृद्धि तथा परमाणु शस्त्रों के उदय से शांति एवं युद्ध की अविभाज्यता के कारण विदेश नीति में कुछ नई प्रवृत्तियां दृष्टिगत हुई है, जिन्होंने अंतरराष्ट्रीय संबंधों को राष्ट्रराज्य तथा शक्ति सम्बन्ध जैसे प्रधान विषयों से हटाकर विकास तथा आर्थिक वित्तीय अन्योन्याश्रिता एवं वैश्विक मुद्दों पर केन्द्रित करके एक परराष्ट्रीय व्यवस्था का निर्माण किया है जिसमें राष्ट्रों के मध्य पारस्परिक सहयोग अपरिहार्य हो गया है। वर्ष 1990 के पश्चात भारत इसी नीति के आधार पर दक्षिण एशियाई राष्ट्रों के साथ सम्बन्धों के संचालन में प्रयासरत है।

शब्दकुंजी- अंतरराष्ट्रीय संबंध, वैश्वीकरण, दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग।

प्रस्तावना - किसी राष्ट्र के राष्ट्रीय हितों को सुरक्षा एवं अभिवृद्धि का माध्यम उनकी विदेश नीति होती है। भारत भी अपनी विदेश नीति की इसी परिप्रेक्ष्य में सम्राट अशोक के मूल्यों ,बौद्ध धर्म की मान्यताओं तथा गांधीजी के दर्शन के अनुरूपः शांतिपूर्ण एवं सहअस्तित्व के साथ संचालित करते हुए विश्व एवं दक्षिण एशिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता रहा है।

सोवियत संघ के विघटन तथा एकधुवीय विश्व व्यवस्था के उदय, विदेश नीति के निर्धारण में गैरराष्ट्रीय कारकों की भूमिका वैश्वीकरण एवं अन्तर्राष्ट्रीय अंतनिर्भरता में उत्तरोत्तर वृद्धि तथा परमाणु शस्त्रों के उदय से शांति एवं युद्ध की अविभाज्यता के कारण विदेश नीति में कुछ नई प्रवृत्तियां दृष्टिगत हुई है जिन्होंने अंतरराष्ट्रीय संबंधों को राष्ट्रराज्य तथा शक्ति सम्बन्ध जैसे प्रधान विषयों से हटाकर विकास तथा आर्थिक वित्तीय अन्योन्याश्रिता एवं वैश्विक मुद्दों पर केन्द्रित करके एक परराष्ट्रीय व्यवस्था का निर्माण किया है जिसमें राष्ट्रों के मध्य पारस्परिक सहयोग अपरिहार्य हो गया है। अत दक्षिण एशिया के सन्दर्भ में भारतीय नीति यह है कि -

- **शांति एवं स्थिरता का वातावरण उत्पन्न हो तथा पड़ोसियों के साथ विश्वास बहाली हो।**
- **दक्षिण-दक्षिण सहयोग में वृद्धि की जाए जिससे आर्थिक विकास को गति मिले तथा बाहरी शक्ति का हस्तक्षेप न हो सके।**
- **विस्तारित पडोसी की नीति पर कार्य किया जाय।**
- **सार्क को दक्षिण एशियाई राष्ट्रों के मध्य साझे मंच के रूप में प्रयोग करके आतंकवाद, खाद्य सुरक्षा, पर्यावरण, ग्लोबल वार्मिंग तथा विकास की चुनौतियों का समाधान किया जाये।**

अध्ययन का उद्देश्य-

1. **भारत की क्षेत्रीय सहयोग और क्षेत्रीय भूमिका का मूल्यांकन करना।**
2. **भारत और पड़ोसी देशों के बीच द्विपक्षीय एवं बहुपक्षीय संबंधों का विश्लेषण करना।**
3. **दक्षिण एशियाई देशों के बीच क्षेत्रीय विकास के अवसरो का विश्लेषण करना।**

साहित्य समीक्षा

1. **बिमल प्रसाद,** 1989, **"दक्षिण एशिया में क्षेत्रीय सहयोग" इस पुस्तक में दक्षिण एशिया में क्षेत्रीय सहयोग की स्वरूप, आकार, अवधारणा एवं उसकी चुनौतियों का विश्लेषण किया गया है।**
2. **एस.डी. मुनि** 2003, **"भारत ओर दक्षिण एशिया : एक रणनीतिक परिप्रेक्ष्य" इसमें भारत की सहयोग, सम्बंध, विकास, रणनीतिक भूमिका एवं पड़ोसी देशों के साथ संबंधों का अध्ययन किया गया है।**
3. **जे. एन. दीक्षित,** 2003 **"भारत की विदेश नीति" इस पुस्तक में भारत की विदेश नीति एवं दक्षिण एशिया में उसकी भूमिका, सम्बंध, सहयोग को स्पष्ट करती है।**
4. **वि. पि. दत्त,** 2007,**"भारत की विदेश नीति" इसमें ऐतिहासिक एवं समकालीन दृष्टिकोण से भारत की विदेश नीति का विश्लेषण किया गया है।**
5. **कांति वाजपेयी, 2013, "रक्षा एवं रणनीतिक अध्ययन" इस पुस्तक में भारत की सुरक्षा नीतियों एवं दक्षिण एशिया में रणनीतिक संतुलन का अध्ययन किया गया है।**

वर्ष 1990 **के पश्चात भारत इसी नीति के आधार पर दक्षिण एशियाई राष्ट्रों के साथ सम्बन्धों के संचालन में प्रयासरत है। भारत, पाकिस्तान से पह अपेक्षा करता है कि वह जिम्मेदार एवं शातिपूर्ण पड़ोसी की भूमिका निभाये, जिससे दोनों राष्ट्रों के मध्य तनाव कम हो तथा संसाधनों का प्रवाह विकास की चुनौतियों की ओर हो सके। भारत-पाक के बीच बेहतर सम्बन्ध दक्षिण एशिया को राजनीति में बहुधुवीय विश्व के केन्द्र के रूप में स्थापित कर सकता है साथ ही आतकवाद, धार्मिक कट्टरता, नशीली दवायें एवं जाली नोट आदि की समस्याएं भी हल हो सकती है। भारत पाकिस्तान के बीच बढता हुआ तनाव दक्षिण एशिया में महाशक्तियों को हस्तक्षेप करने का अवसर देता है इस तथ्य को दृष्टिगत रखकर भारत द्वारा पाकिस्तान के साथ सम्बन्ध सुधारने के लिए हर प्रयास करने के बावजूद (लाहोर घोषणा पत्र आगरा शिखर वार्ता** Track 1 to Track 5) **अब तक आशातीत सफलता नहीं मिली है। किन्तु अप्रैल** 2010 **में हुए** 16**वें सार्क सम्मेलन तथा नवम्बर** 2011 **में सम्पन्न** 17**वे सार्क सम्मेलन से सहयोग के क्षेत्रों का विकास हुआ। इसी क्रम में भारत-पाक के मध्य सितम्बर** 2012 **में हुआ उदार वीजा समझौता एक आशा की किरण जगाता है।नवम्बर 20-27 2014 के मध्य 18 वा सार्क शिखर सम्मेलन काठमाडू में शान्ति और समृद्धि के लिए बेहतर एकता के केन्द्रीय विषय पर सम्पन्न हुआ। इसमें सार्क ऊर्जा सहयोग संरचना करार महत्वपूर्ण उपलब्धि रही। अफगानिस्तान के साथ भारत के नये सम्बन्धों की शुरूआत वर्ष 2001 से उसके विकास में सक्रिय योगदान यथा आधारभूत संरचना विकास, ऊर्जा, विद्युत आपूर्ति, परिवहन शिक्षा आदि के क्षेत्रों में हो चुका है। मई, 2011 में भारतीय प्रधानमंत्री ने इस विकास गति को आगे बढ़ाते हुए 500 मिलियन डॉलर की अतिरिक्त सहायता प्रदान की। नवम्बर 2012 में अफगानिस्तान के राष्ट्रपति की भारत यात्रा के दौरान अफगानिस्तान को सहायता तीसरा दौर शुरू करने सहित चार समझौतों पर हस्ताक्षर भी किये गये। भारत भूटान के साथ भी मैत्रीपूर्ण सम्बन्धी की दिशा में उसके विकास में योगदान दे रहा है वहीं दूसरी ओर वर्ष 2002 में हुई संधि के तहत भारत ने भूटान की विदेश नीति को पूर्ण स्वतंत्रता प्रदान करते हुए संरक्षित एव निर्देशित शब्द समाप्त कर दिये। साथ ही दोनों राष्ट्रों ने यह आश्वासन दिया कि यह अपनी भूमि का उपयोग एक दूसरे के विरुद्ध नहीं होने देंगे। नवम्बर 2008 में भारतीय राष्ट्रपति तथा अप्रैल 2010 में भारतीय प्रधानमंत्री की भूटान यात्रा के दौरान भूटान में भारत समर्थित कई परियोजनाओं पर हस्ताक्षर करके सहयोग के नये आयाम विकसित किये गये।**

भारत-बांग्लादेश साझी विरासत के रूप में सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनीतिक रूप से परस्पर जुड़े हुए है। हालांकि दोनों राष्ट्रों के मध्य फरक्का विवाद, न्यूमूर द्वीप विवाद तथा सीमा विवाद व्याप्त है किन्तु भारत इनके शांतिपूर्ण समाधान हेतु निरन्तर प्रयासरत है। वर्ष 2008 में सरकार बनने के बाद इन राष्ट्रों के मध्य सुरक्षा, आर्थिक सांस्कृतिक क्षेत्रों में सकारात्मक प्रवृत्तियों दिखाई देती है। बांग्लादेश सरकार का यह संकल्प कि वह अपनी भूमि का प्रयोग भारत विरोधी गतिविधियों के देना सहनीय है। मई 2011 में भारत एवं बाग्लादेश के मध्य तीस्ता एवं फेनी नदी के बटवारे पर 15 वर्षीय संधि पर हस्ताक्षर किये गये। मार्च 2013 में भारतीय राष्ट्रपति ने बाग्लादेश के साथ पूर्व में हुए समझौतों पर अपनी वचनबद्धता दोहराते हुए यह संदेश दिया कि बांग्लादेश की संवैधानिक सत्ता को भारत का पूरा समर्थन है।

भारत-श्रीलंका के मध्य प्राचीन काल से ही सांस्कृतिक एवं राजनीतिक सम्बन्ध आज भी जारी है किन्तु वर्ष 2007-08 में सेतु समुद्रम परियोजना का श्रीलंका द्वारा पारिस्थितिक असंतुलन के तर्क पर कड़ा विरोध किया गया। भारत-श्रीलंका परस्पर सहयोग की दिशा में 1000 मेगावाट बिजली ग्रिड की स्थापना रेल लाइन का विकास, विधिक सहायता आदि विषयों पर अग्रसर है।

जून 2010 में श्रीलंकाई राष्ट्रपति की भारत यात्रा के दौरान सात समझौतों पर हस्ताक्षर पर सहमति हुई 2011 को भारत सरकार की मदद से श्रीलंका में 180 बिस्तर वाले अस्पताल के निर्माण मैं सहायता प्रदान करेगा।

भारत-नेपाल में सम्बन्धों में दो तथ्य महत्वपूर्ण है-

- दोनों राष्ट्रों के मध्य खुली सीमा सिद्धान्त।
- मित्रता और सहयोग संधि 1950.

भारत नेपाल को ट्रांजिट अधिकार नेपाल का समुद्री व्यापार भारत के माध्यम से प्रदान करता है, जो भारतीय मैत्रीपूर्ण एवं सहयोगात्मक नीति का द्योतक है। फरवरी 2011 को नेपाली राष्ट्रपति एवं भारतीय प्रधानमन्त्री के मध्य द्विपक्षीय हित संवर्धन के विभिन्न मुद्दों पर चर्चा हुई। दिसम्बर, 2012 को भारतीय राष्ट्रपति ने यह कहा कि स्थिर धर्मनिरपेक्ष लोकतांत्रिक गणतंत्र के रूप में नेपाल का आगे बढ़ना सभी के हित में है। भारत अपने पड़ोसी देश के सामाजिक एवं आर्थिक विकास में सहयोग का पूरा प्रयास करता रहेगा।

वर्ष 2008 से मालदीव में वास्तविक रूप से बहुदलीय लोकतंत्र प्रणाली अस्तित्व में आने के बाद सहयोग की नई संभावनाएं विकसित हुई है। भारत मालदीव में निवेश, व्यापार, तकनीकी सहयोग तथा पर्यावरणीय एवं जलवायु परिवर्तन विषयों पर सहयोग का इच्छुक है। साथ ही भारत सैन्य एवं सामरिक सुरक्षा के क्षेत्र में सहयोग करना चाहता है। मालदीव के राष्ट्रपति ने फरवरी 2011 में दक्षिण एशिया का पुर्ननिर्माण लोकतंत्र सामाजिक न्याय और सतत विकास पर आयोजित विश्व सम्मेलन को संबोधित करके इसकी आवश्यकता पर बल दिया।

उपरोक्त विश्लेषण के आधार पर हम यह देखते है कि भारत, दक्षिण एशिया के प्रति सहयोगात्मक तथा शांतिपूर्ण विदेशनीति का आवलम्बन करता आया है जिससे इस क्षेत्र में विकास, आर्थिक एवं क्षेत्रीय सहयोग आदि लक्ष्यों को प्राप्त करके वैश्विक चुनौतियों का सामना किया जा सके। भारत के प्रयासों से ही सार्क SAPTA से SAFTA की ओर अग्रसर हो रहा है। चिम्पू में आयोजित 16 वे सार्क शिखर सम्मेलन में भी पर्यावरण एवं जलवायु परिवर्तन विषयों पर भारत ने सभी राष्ट्रों को एकजुट होकर सहयोग करने का आग्रह किया।

सार्क के 17वें शिखर सम्मेलन (नवम्बर 2011, मालदीव) तथा 18वें शिखर सम्मेलन में भी सार्क राष्ट्रों के मध्य सहयोग पर बल दिया गया तथा व्यापार परिवहन, आर्थिक एकीकरण, सुरक्षा तथा जलवायु परिवर्तन आदि विषयों पर सहयोग हेतु विश्वास बहाली को आवश्यक बताया गया। सार्क के साथ-साथ भारत बिम्सटेक एवं हिमतक्षेस के माध्यम से भी दक्षिण एशिया में सहयोग एवं एकीकरण का प्रयास कर रहा है, किन्तु इसके बावजूद दक्षिण एशियाई राष्ट्रों का भारत के साथ आशातीत सहयोग दृष्टिगत नहीं हो पा रहा है। इसके निम्न कारण दृष्टिगत होते हैं-

- **दक्षिण एशिया भारत केन्द्रित क्षेत्र तथा शक्ति संतुलन भी भारत की ओर होने के कारण पडोसी देशों में भय, सन्देह आदि के तत्व सदैव विद्यमान रहते हैं।**
- **बिग ब्रदर सिंड्रोम तथा भारत के साथ सहयोग में इन राष्ट्रों को अपनी पहचान के संकट की समस्या प्रतीत होती है। अत अधिकाश राष्ट्र भारत विरोधी सिद्धान्त (**Anti India Theory) **को मान्यता देते हैं।**
- **भारत की विस्तृत सीमाये होने के कारण अधिकतर राष्ट्रों से इसका सीमा विवाद एवं राजनैतिक मतभेद भी बने रहते है जिससे सहयोग बाधित होता है।**
- **आर्थिक विकास के विभिन्न मॉडल अपनाये जाने के कारण भी सहयोग बाधित होता है।**
- **आर्थिक संसाधनों का वितरण भी असंतुलित है लगभग** 70 **प्रतिशत संसाधन भारत के पास होने के कारण अन्य राष्ट्रों में वैमनस्यता व्याप्त रहती है।**
- **भारत-पाकिस्तान में शक्ति प्रतिस्पर्धा।**
- **दक्षिण एशिया में सहयोग की कमी की पृष्ठभूमि में महाशक्तियों का इस क्षेत्र में हस्तक्षेप भी देखा गया है।**

जहां एक और चीन स्ट्रिंग ऑफ़ पल्स पॉलिसी अपनाकर भारत को घेरने तथा पाकिस्तान के सहयोग की नीति अपनाता है, वहीं दूसरी ओर अमेरिका भारतीय बाजार, भू-स्थिति तथा हिन्द महासागर में अपने हितों (डियागो गार्सिया) के कारण समय-समय पर भारत में रूचि लेकर रूस तथा बीन को प्रति-संतुलित करने का प्रयास करता है। चीन भी दक्षिण एशिया में अपना प्रभाव बनाये रखने हेतु पाकिस्तान को सहायता देकर उसे क्षेत्रीय सहयोग की दिशा से भ्रमित कर देता है। साथ ही अमेरिका भी रूस और भारत को प्रतिसंतुलित करने के लिए पाकिस्तान को आर्थिक मदद आदि देता रहता है. जिससे दक्षिण एशियाई राष्ट्रों के मध्य सहयोग की दिशा महाशक्तियों के स्वार्थों के कारण बाधित हो जाती है।

अतः हम यह देखते है कि दक्षिण एशिया में राष्ट्रों के मध्य सहयोग के मार्ग में अनेक बाधाये मौजूद है किन्तु इन राष्ट्रों के विकास हेतु क्षेत्रीय सहयोग अपरिहार्य है और कमोवेश भारत इन बाधाओं को पार करते हुए इस दिशा में अग्रसर भी है. जोकि दक्षिण एशिया में सहयोग एवं विकास की दिशा में नई पहल है।

संदर्भ सूची :

1. **बिमल प्रसाद,** 1989, **"दक्षिण एशिया में क्षेत्रीय सहयोग" ।**
2. **एस.डी. मुनि** 2003, "**भारत ओर दक्षिण एशिया : एक रणनीतिक परिप्रेक्ष्य**" **।**
3. **जे. एन. दीक्षित,** 2003 "**भारत की विदेश नीति" ।**
4. **वि. पि. दत्त,** 2007,"**भारत की विदेश नीति" ।**
5. **कांति वाजपेयी, 2013**, "**रक्षा एवं रणनीतिक अध्ययन" ।**
6. World Bank Publications
7. Human Development Report
8. SAARC Regional Reports